भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/UD/29-150/2023-2025

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 8 | अंक 07 | उदयपुर शनिवार 15 अप्रेल 2023 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

लोकसंस्कृति की विरासत

आशा तो यह बंधी थी कि आजाद होने पर हम अपनी पारंपरिक उपलब्धियों तथा समृद्धियों को और अधिक सुरंगे रूप में शोभित कर सकेंगे किंतु मनुष्य समष्टिनिष्ठ की बजाय व्यक्तिनिष्ठ ही अधिक हो गया जिससे वह अपनेपन में ही आत्मकेन्द्रित हो गया। संस्कृति का परिवेश नैसर्गिक परिवेश है। उसकी संरचना, संचेतना और संस्कारशीलता को उसकी अपनी आधारशिला, आत्मीयता, अंतश्चेतना तथा ऊर्जा से प्रकाशवान होने देना ही उसकी असलियत तथा मूल एकरूप का संरक्षण है। हमने अपनी निज की शर्तों के अनुरूप गमले में गेहूं उगाकर परखनली में शिशु पैदा कर, मौसमी चीजों को बेमौसमी कर तथा टेलीविजन के विजन के साथ समझौता कर संस्कृति एवं कलारूपों की अदला-बदली करने में कोई कसर नहीं रखी। इससे हमारे सांस्कृतिक अनुरंजन एवं उल्लास को बड़ा धक्का लगा है।

लोकसंस्कृति हमारी जीवन-शक्ति है। इसके प्रति लोक की अटूट आस्था, अटूट विश्वास और अटूट जुड़ाव होने के कारण यह परम्पराशील है। परम्पराशील है इसलिए प्रवाहमयी है। प्रवाहमयी है इसलिए प्रयोगधर्मी है। प्रयोगधर्मी है इसलिए पर्यावरणीय है।

प्रकृति और मनुष्य के बीच जो सत्व और सत्य उद्घाटित है, सनातन संबंधों का जो सुखद सौंदर्य सुवासित है, उसी का निकट और नैकट्य संस्कृति की सुघट आत्मा है इसलिए उसके माध्यम से मनुष्य नानाप्रकार के राग-रंग, त्योहार-उत्सव, संस्कार-सरोकार तथा आनंद-अनुरंजन से रस-प्लावित होता है। वह अपने को कभी उदास, निराश, हताश, एकाकी और पराजित महसूस नहीं करता। अजेय उत्साही, उल्लासित तथा कर्मशील बने रहकर सार्थक जीवन जीने की संजीवनी पाता है

इसलिए हमारे यहाँ जीवन ही ज्योतिर्मय नहीं है, महोत्सव है। यह जीवन और वर्तमान ही वैशिष्ट्यपूर्ण नहीं है, भविष्य तथा मृत्यु भी और भव-भव का जीवन निरर्थक न हो, इसके लिए मनुष्य धर्म की आराधना करता है। पापाचार से डरता है। शुद्ध आचरण एवं सात्विक विचार की अनुपालना में अपने चित्त को रमाये रखता है। तीर्थाटन करता हुआ वह विविध प्रकार के देवी-देवताओं, भांति-भांति की पवित्र नदियों तथा साधनारत संतों, आचार्यों एवं महामानवों का सान्निध्य, सत्संग एवं शुभ-लाभ लेता है। सुखद यात्रा के लिए पथरक्षिका पथवारी माता का पूजन करता है और सकुशल लौट आने पर गंगोज भरता है।

जनम-परण तथा मरण की त्रि-धारा में मुनष्य कई संस्कारों से अनुप्राणित हुआ संस्कृति के विराट चैतन्य का वैभव समेटता है। संस्कृति की अंत:सलिला का ओज और ऊर्जस्व अंधकार से प्रकाश की ओर, असत्य से सत्य की ओर तथा मृत्यु से अमरत्व की ओर बढ़ने की विरासत को विवेकपूर्ण आत्मसात् को हृदयंगम कर मनुज मानवता की आराधना में खो जाता है। यह संस्कृति विविधरूपा है। समष्टि स्वरूपा है। समष्टि भाव के कारण ही सारे भेद-अभेद में और द्वैत-अद्वैत में परिवर्तित हुए मिलते हैं।

व्यक्ति अपने लिए नहीं जीकर समग्र समष्टि के लिए जीने लगता है। इसी कारण यहाँ का मानव सहअस्तित्व तथा सामुदायिक भाव-बोध लिए फलता-फूलता पल्लवित होता है। वैदिक ऋषियों के मंत्रों में यहीं भावना बलवती हुई है जिसमें कहा गया है- हम एक-दूसरे की रक्षा करें। प्राप्त साधनों का साथ-साथ उपयोग करें। हमारा अध्ययन तेजस्वी हो । हम परस्पर द्वेष न करें। साथ-साथ चलें। साथ-साथ रहें तथा एक-दूसरे के मन को जानें।

आस्था के इसी संबंध की दृढ़ भित्ति के सहारे यहाँ का लोकजीवन अपने समग्र रूप में भाग्य और भगवान का भरोसा लिए निश्चिंत, कर्मशील बन कठोर जीवनयापन का अभ्यासी है। बुद्धि के वाग्जाल में उलझने की बजाय वह होनी-अनहोनी के लिए पारंपरिक विश्वासों और शकुनों के सहारे जीता है। प्रसंग चाहे किसी शुभ कार्य के प्रारंभ करने का हो या किसी कार्य से घर से बाहर जाने का हो, उसके सामने शकुनों का पिटारा खुल जाता है। गाथा और गीतों का समृद्ध भंडार ऐसे ही लोकविश्वासों से भरा पड़ा है।

किन्तु समय की धार सदैव एक सी नहीं रहती है। कोई समय ऐसा आता है जब जीवनचक्र से जुड़े पारस्परिक सरोकार, आस्था, विश्वास एवं संस्कृति के सेतु डगमगाने लगते हैं। आशा तो यह बंधी थी कि आजाद होने पर हम अपनी पारंपरिक उपलब्धियों तथा समृद्धियों को और अधिक सुरंगे रूप में शोभित कर सकेंगे किंतु मनुष्य समष्टिनिष्ठ की बजाय व्यक्तिनिष्ठ ही अधिक हो गया जिससे वह अपनेपन में ही आत्मकेन्द्रित हो गया।

संस्कृति का जो विराट स्वरूप, विस्तार था, वैभव तथा अखंड विहार था वह संकुचित, सीमित, विकृत तथा विवादित होता हुआ कई पैबंदों, मुखौटों एवं भौंडे रूपों में परिलक्षित होता नजर आया। ऐसी स्थिति में कई चुनौतियाँ हमारे सम्मुख फन फैलाए खड़ी हैं और आदमी ज्यों-ज्यों अपने में राष्ट्रीय से अंतराष्ट्रीय उजास की अलख भरता जाएगा, यह संकट और अधिक गहराता जाएगा। आवश्यकता है, हम अपनी फसल, रौनक तथा पाये को पहचानें तथा उसके सहारे अपनी जवीन-संस्कृति को सुवासित कर उसका संरक्षण करें।

संस्कृति का परिवेश नैसर्गिक परिवेश है। उसकी संरचना, संचेतना और संस्कारशीलता को उसकी अपनी आधारशिला, आत्मीयता, अंतश्चेतना तथा ऊर्जा के प्रकाशवान होने देना ही उसकी असलियत तथा मूल एकरूप का संरक्षण है। बदलते परिवेश में उसकी नैसर्गिकता को खोकर हमने उसके प्रति ज्यादती ही की है।

उसे विविध सेमीनारों, संगोष्ठियों और कार्यशालाओं में ढालकर तथा शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर आयोजित कर प्रयोगधर्मी बनाने में कोई कसर नहीं रखी। इससे उसका आत्म चैतन्य प्रदूषित ही अधिक हुआ है। अपनी निज की शर्तों के अनुरूप गमले में गेहूं उगाकर परखनली में शिशु पैदा कर, मौसमी चीजों को बेमौसमी कर तथा टेलीविजन के विजन के साथ समझौता कर संस्कृति एवं कलारूपों की अदला-बदली करने में कोई कसर नहीं रखी। इससे हमारे सांस्कृतिक अनुरंजन एवं उल्लास को बड़ा धक्का लगा है।

संस्कृति के सरोकार समूहबद्ध और आंचलिक होकर ही प्राणवान बने रहते हैं। हमने उनका बाजारीकरण कर उसे अंतराष्ट्रीय क्षितिज तो दिया पर उसकी पारंपरिक पहचान को खंड-खंड-विखंड कर बिचौलियों के हवाले कर दिया। इसका हश्र यह हुआ कि राजस्थान का तेरहताली नृत्य अब धर्म, आध्यात्म और उपासना का नृत्य नहीं रहा ।

यह बदलाव खानपान, पहनावा, आभूषण, संस्कार, सरोकार, भाषा, बोली आदि में समाविष्ट होता जा रहा है। अपने काज, हूनर और व्यवसाय के लिए प्रतिदिन अप-डाउन करने वाला 'अपडाउनिया' कहलाने में गर्व महसूस करने लगा है। रावण ने गुस्से में आकर जिस तरह पूरी मंडोवर नगरी ही उलट दी थी वैसे ही हमारे कलाबाज लोग इन कलाओं को उलट-पुलट करने में लगे हैं।

एक तरफ वे लोग हैं जो इस अगम साहित्य, सहज संस्कृति और सुगम कला में अपना अनाम योग देते हुए बूंद को समुद्र बनाने में लगे हैं तो दूसरी ओर ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो लोककलाओं की खेती में असर-पसर गए हैं। कला और संस्कृति के साथ दुर्भाग्य तब शुरू होता है जब लोग उसकी सार्वजनिकता का दोहन कर अपनी निज की पहचान देना प्रारंभ कर देते हैं। यह बहुत पुरानी बात नहीं है जब व्यक्ति अपने को अनाम करता हुआ समष्टि के लिए सर्वस्व हो जाता था और उसी को अपना सर्वस्व सुख कल्याण और संतोष मान बैठता था।

हजारों गीत गाथाएं हरजस साक्षी हैं कि व्यष्टि के सब वैभव होते हुए भी लोग समष्टि के लिए सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय बने हैं। यदि ऐसा नहीं होता तो मीरां के पदों की संख्या में दिन-दूनी वृद्धि नहीं होती। कबीर के भजन निरक्षरों की महफिल में रात्रि जागरण के तंदूरों पर भक्ति रस की तन्मयता और ताजगी देते नहीं मिलते। आज कहां मीरां लिख रहीं हैं? कहां कबीर लिख रहे हैं? चन्द्रसखी या कि अणदा, रैदास लिख रहे हैं! पर कमाल है उनके नाम पर आज भी लिखे जा रहे हैं और आने वाले कल भी लिखे जाते रहेंगे।

वे हिमालय चले गये पर गले नहीं हैं :

सृष्टि की रचना बड़ी अद्भुत रहस्यमय है। दृश्य-अदृश्यमय इसे कोई मनुष्यधारी जीव नहीं समझ पाया। दृश्यजगत भी जहाँ तक हम देख पाते हैं, उतना ही है। धरती, आकाश, हवा, पानी, सब एक-दूसरे से बंधे हुए हैं। धरती को आकाश ने आकाश को हवा ने, हवा को धरती ने, धरती को शेषनाग ने तो शेषनाग को कश्यप ने थाम रखा है। कश्यप पानी पर थमा तीन-सौ सत्ताईस योजन का है। एक-सौ कोस का एक योजन कहा गया है।

कई बार धरती उजड़ी, प्रलय हुए। जगतजननी ने अपनी ज्योति की कालिख से नर-नारी पैदा कर सृष्टि की पुनर्रचना की। समुद्र भी इसी कालिख से नीला है। छतरी की तरह गोल पृथ्वी को आठ तानियों की तरह आठ दिग्पालों ने थाम रखा है। शेषनाग इस छतरी की डंडी है।

धरती सारी एक जैसी नहीं है । कोई धरती खाने को दौड़ती है तो कोई सदैव के लिए बस जाने को मोहती है। धरती के जितने भी अंचल हैं, बड़ें विचित्र, मनोरम, ऊँची-नीची घाटियों, नदी-नालों, बफीर्ले पहाड़ों तथा समुद्री जलों से रूपित है। अदृश्य अच्छी-बुरी आत्माएँ, मेलों-ठेलों में मनुष्य और अन्य जीवधारियों के रूप में देवताओं का परिदर्शन भूतों तथा दिव्य आत्माओं के मेले मनुष्य के ज्ञान, उसकी पहुँच और कल्पना से भी परे हैं ।

बफीर्ली घाटियों में कभी-कभार हमें हिममानव के दर्शन हो जाते हैं। ये दिखते ही मनुष्य की नजरों से अलोप हो जाते हैं। उन्होंने अपना पाप धोकर जो पवित्रता धारण की उसी के चलते उन्हें मानव दृष्टि तक स्वीकार्य नहीं है। मनुष्य की निगाह पड़ते ही वे भागते, अदृश्य हो जाते हैं। ये दरअसल छह हैं। इनमें पाँच तो पांडव हैं और एक द्रोपदी ।

ये हिमालय गलने, पाप धोने, पवित्र होने गये थे सो अब तक तपस्यालीन हैं। ऐसे और भी तपस्वी गुफाओं में सूक्ष्मजीवी हुए तपाराधना कर रहे हैं। ये हवाभाखी हैं। इनमें इतना तेज प्रदीप्त हुआ मिलता है कि धरती को छोड़ चट्टानों पर स्थूल शरीरी बन चलते हैं यही कारण है कि कभी-कभी इनके चरण उन चट्टानों पर निशान बना देते हैं। मनुष्य पापों का पुतला और ये पापों से मुक्त हैं इसलिए इसलिए मनुष्य के लिए अलौकिक एवं रहस्यमय बने हुए हैं।

- डॉ. महेन्द्र भानावत

पोथीखाना

राजस्थान की विविध क्षेत्रीय विभूतियों का श्रद्धा स्मरण

राजस्थान में ऐसी अनेक विभूतियां हुईं जिन्होंने विविध क्षेत्रों में अपनी दूरगामी पहुंच दी। इन पर विद्वानों ने बहुत लिखा है। आधुनिक राजस्थान में भी ऐसी अनेक विभूतियां हुई हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ ऐसी ही 21 विभूतियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को रेखांकित करता है।

इसमें मुख्यत: राजनीति, शिक्षा,, कला, इतिहास, साहित्य, विज्ञान, पत्रकारिता, स्वतंत्रता संग्राम तथा फिल्म निर्माण के क्षेत्र में विशिष्ट पहचान देनेवालों पर विभिन्न विद्वानों द्वारा उनके योगदान तथा मूल्यांकन को लेकर प्रामाणिक जानकारी प्रस्तुत की गई है। सम्पादक द्वय में से 8 आलेख तो प्रो. मिश्रीलाल मांडोत के ही हैं। प्रो. रूपसिंह बारेठ ने क्रान्ति के अजेय योद्धा केसरीसिंह बारहठ पर लिखा है।

ग्रन्थ में सर्वाधिक 4 आलेख राजनेता मोहनलाल सुखाड़िया, भैरोंसिंह शेखावत, माणिक्यलाल वर्मा तथा अशोक गहलोत पर हैं। तीन-तीन आलेख इतिहासकार डॉ. गोपीनाथ, मुनि जिनविजय तथा के. एस. गुप्ता, शिक्षाविद् मोहनसिंह मेहता, जनार्दनराय नागर तथा अनिल बोर्दिया एवं क्रान्तिकारी केसरीसिंह, विजयसिंह तथा अर्जुनलाल सेठी से सम्बन्धित हैं।

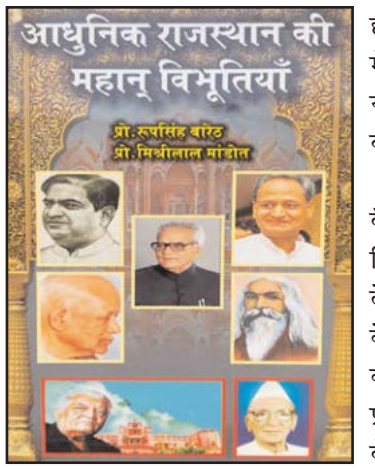

पत्रकारों में दुर्गाप्रसाद चौधरी तथा कर्पूरचन्द कुलिश और कला के क्षेत्र में देवीलाल सामर एवं कोमल कोठारी और साहित्यकार के रूप में कन्हैयालाल सेठिया व विजयदान देथा सम्मिलित हैं। वैज्ञानिक डॉ. दौलतसिंह कोठारी के अलावा फिल्म निर्माता ताराचन्द बड़जात्या भी श्रद्धा के साथ स्मरण किये गये हैं।

स्मरणीय है कि ग्रन्थ में संग्रहीत 21 इन विभूतियों में वर्तमान में मात्र अशोक गहलोत हमारे बीच मुख्यमंत्री के रूप में जनसेवार्थ विभिन्न कारगर योजनाओं के कारण लोकप्रिय बने हुए हैं।

डॉ. दौलतसिंह कोठारी वैज्ञानिक होने के साथ-साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी अद्‌भुत देन लिये रहे। उन्होंने विज्ञान के साथ आध्यात्म के मणि-कांचन योग का व्यावहारिक प्रयोग किया। गीता तथा अन्य वेदादि ग्रन्थों की उनकी विशिष्ट व्याख्या विशिष्ट देन के रूप में स्वीकारी गई।

डॉ. महेन्द्र भानावत ने लोककलाविद् देवीलाल सामर के साथ भारतीय लोककला मण्डल में रहकर लोककलाओं के उन्नयन, संरक्षण, प्रकाशन तथा परम्पराजीवी विधाओं पर प्रयोगधर्मी प्रस्तुति करते जो कार्य-प्रदर्शन किये उनका विश्वव्यापी प्रभाव हुआ। उन्होंने लिखा भी, ''लोकसंस्कृति का सर्वथा अछूता क्षेत्र लेकर सामरजी ने जो विस्तार और गहराई दी वह इतिहास का एक अनिवार्य दस्तावेज ही बनगया। मुझे तो उन्होंने लोककला का आदमी ही बना दिया। पृ. 190

ताराचन्द बड़जात्या पर भी अधिक नहीं लिखा गया। उन्होंने अपनी राजश्री प्रोडक्शन के माध्यम से फिल्म उद्योग में निर्माता, वितरक और प्रदर्शन के क्षेत्र में बड़ी ख्याति अर्जित की। प्रो. मिश्रीलाल के शब्दों में-''वे प्रथम निर्माता थे जिन्होंने अनगिनत कलाकारों, निर्देशकों और पार्श्व गायकों को अपनी कला, योग्यता और क्षमता का सुअवसर दिया। सन् 2013 में उन पर 5 रूपये का डाक टिकिट भी जारी किया।'' पृ. 320

साहित्यागार जयपुर से 2021 में प्रकाशित यह पुस्तक 550 रूपये की है।

- डॉ. तुक्तक भानावत

दुर्भेद्य और अभेद्य दुर्गों की कथा-यात्रा

- डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' -

जब कभी पहाड़ियों पर बने किलों पर दृष्टि पड़ती है तब लगता है कि किले हमारे अतीत के गौरव हैं। दुर्ग, द्वंद्व, गढ़, आदि भी इसके पर्याय हैं किन्तु किले से मूल आशय था कि जिस जगह को कील की तरह स्थिर कर दिया गया हो अथवा जहां से नजर रखी जा सके। दुर्ग से आशय था जहां पहुंचना दुर्गम हो। गढ़ मूलत: गढ़ने या बनाने का अर्थ देता है। यह शब्द पश्चिम भारत में लोकप्रिय रहा, गुजरात और सिन्ध से लेकर पेशावर तक गढ़ शब्द ख्यात रहा है।

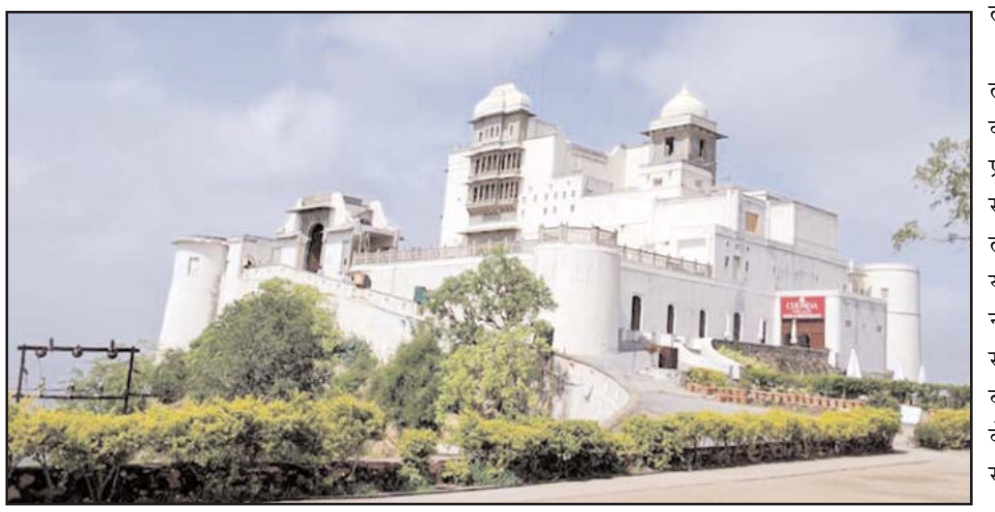

लोक में गढ़ी या गढ्ढ़ी भी प्रचलन में रहे। 15वीं सदी में लिखित 'राजवल्लभ वास्तुशास्त्रं', 'वास्तुमण्डनम्' आदि में गढ़ को ही संस्कृत संज्ञा के रूप में काम में लिया गया है। दुर्ग को शक्ति का साम्राज्य माना गया। प्राय: राजा जो खेतपति, खत्तिय से क्षत्रिय बना है, यहां पर अपने चतुरंगिणी सैन्यबल को रखता, उसका नियंत्रण करता और 'खलूरिका' से उनका मुआयना करता। सैनिकों की सहायता के लिए कई शिल्पियों, कारीगरों, जिनगरों आदि सेवादारों को वैसे ही रखा जाता था जैसे कि आज सेना या पुलिस में रखा जाता है। यह सब राजाश्रयी वेतन अथवा जागीर को प्राप्त करते थे और अपने को 'राज' से सम्बद्ध मानते। यह मान्यता कई कथा-रूपों में आज भी अनेक जातियों में प्रचलित है।

दुर्ग मुख्यत: सुरक्षा की जरूरत की खोज रहा है। शत्रुओं को जिस किसी भी तरह धोखे में रखने का ध्येय भी रहता था। ऋग्वेद आदि से विदित होता है कि इन्द्र ने सुरक्षा के लिए पुरों का महत्त्व समझा और उसने स्वयं पुरों का ध्वंस किया। यही बात कालांतर में मेरू पर्वत को दुर्ग बनाकर देवताओं को सुरक्षित करने के रूप में पुराणों का विषय बनी। पुर, परिक्खा, काण्डवारियों, कपिशीर्षों वाले वप्र या दीवार, समुन्नत द्वार, हर्म्य-हवेलियां, वरंडिका, रथ्या, नागदंत वाले प्रोली-प्रतोली, मंदिर-प्रासाद, भाण्डागार जैसी रचनाएं दुर्ग का अंग बनी।

मेरू पर्वत का आख्यान चीन और भारत से लेकर यूनान तक समानत: प्रचलित रहा है। कहीं-न-कहीं इसके मूल में समूचे क्षेत्र की परम्पराएं समान रही किन्तु आवश्यकताओं के अनुसार निर्माण में भेदोपभेद मिलते हैं।

चाणक्य के अर्थशास्त्र, उसी पर आधारित कामंदकीय नीतिसार, मनुस्मृति, देवीपुराण, मत्स्यपुराण, अग्निपुराण, रामायण, महाभारत, हरिवंश आदि में प्रारंभिक तौर पर दुर्गों का विस्तृत वर्णन क्या बताता है। राज्य सहित राजाओं के कुल की सुरक्षा के लिए एकानेक दुर्ग विधान से किलों को बनाने का वर्णन यह जाहिर करता है कि ये निर्माण राज्य की दृढ़ता के परिचायक थे और इन्हीं की बदौलत कोई राजा दुर्गपति, दुर्गस्वामी या भूभुजा कहा जाता था। 'दुर्गानुसारेण स्वामि वा राट्' कहावत से ज्ञात होता है कि जिसके पास जितने दुर्ग, वह उतना ही बड़ा राजा या महाराजा। महाराणा कुंभा (1433-1568 ई.) ने 'दुर्गबत्तीसी' का विचार देकर भारतीय दुर्ग परम्परा में नया अध्याय जोड़ा। 'जयसिंह गुण वर्णन' जैसे ग्रंथ में राजाओं को दुर्गाधिपति कहा है।

प्रारम्भ में लकड़ी के दुर्ग बनते थे जिनको शत्रुओं द्वारा जला दिए जाने का भय रहता था। अशोक के समय पत्थरों का प्रयोग आरम्भ हुआ किन्तु बालाथल जैसे पुरास्थलों पर जो ऊंचाई वाली प्राकार युक्त भवन रचनाएं मिली हैं, वे प्राचीन है। गुप्तकाल में दुर्गों का निर्माण अधिक रहा। कईबार इनको 'विजय स्कंधावार' के रूप में भी जाना गया जो जीते हुए किले होते थे या राजा के निवास या फिर छावनियां होती थीं। भोजराज ने तो राजा के प्रयाणकाल में विश्राम के दौरान डेरों को यह संज्ञा दी है किन्तु उसने विवरण अर्थशास्त्र से ही ग्रहण किया है।

सल्तनतकाल में दुर्गों के भेदन की विधियों का वर्णन मिलता है। साबात और सुरंग की विधि से दुर्गों को तोड़ने का जिक्र मुगलकाल में बहुधा मिलता है। इसी काल में दुर्ग जीतने का जिक्र 'कंगूरे खण्डित करना' जैसे मुहावरे से दिया जाता था। गवरी के ख्याल में आज भी कांगरा खांडा कीधा जैसा संवाद सुना जाता है।

किलों की रचना में प्राकार को बहुत मोटा बनाया जाता था। आक्रमणों में इनके टूटने पर रातोंरात निर्माण कर लिया जाता था। इनके साथ ही सह प्राकार होता था जिन पर सैनिक घूम सकते थे। मंजनिकों से पत्थर बरसा सकते थे। इसी का उपयोग बाद में तोपों को दागने के लिए किया गया जिनमें अंग्रेजों ने नवाचार किया। हालांकि इसका प्रारम्भ मुगलों के काल में हो चुका था। दुर्गों के द्वार पर शत्रुओं की खोपड़ियां लटकाकर भय उत्पन्न करने का चलन भी इसी दौरान सामने आया जबकि पहले अर्गला भेदन को ही प्राथमिकता दी जाती थी। इसमें द्वार तोड़ने और उसके अंदर लगी पत्थर की आड़ी पट्टिकाओं को तोड़कर सेना का आवागमन निर्बाध कर दिया जाता था। ये पट्टिकाएं ही अर्गला कही जाती थी, हालांकि मूलत: इनका आशय द्वार के पीछे बंद करने के लिए लकड़ी या लोहे की पट्टिका से लिया जाता था।

अभेद्य और दुर्भेद्य दुर्गों का रोचक विवरण है लेकिन हम कितना जानते हैं, केवल देखकर ही कल्पना कर लेते हैं। इनके साथ नरबलियों के प्रसंग भी कम नहीं जुड़े हैं, मगर क्यों हैं! कई सवाल हैं जो दुर्ग की दीवार की तरह भेदने बाकी लगते हैं। मेवाड़ में नगरी मैदानी कस्बा है जिसको यूनानियों ने घेरा था। वराहमिहिर ने पुरभेदन और नगर घेरने का संदर्भ ही दिया है। चित्तौड़गढ़ 8वीं सदी में बना, आखिरी किला सज्जनगढ़ 1885 में बना, जबकि ईसापूर्व का बालाथल पुरास्थल शहर के बहुत ही निकट है जहां ऊंचाई पर दुर्ग जैसी रचना मिली है।

सुमित्रा मेहता सेवानिवृत्त

बड़ीसादड़ी से 8 किलोमीटर दूर खरदेवला गांव में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में पूर्णकालिक शिक्षा सेवा कर मार्च 2023 को वरिष्ठ शिक्षिका सुमित्रा मेहता सेवानिवृत्त हुईं। उन्होंने 35 वर्ष 6 माह 16 दिन अध्यापन कार्य किया।

श्रीमती मेहता ने अपने साथी शिक्षकों तथा करीब 350 छात्रों को प्रीतिभोज दिया। सभी शिक्षकों का शॉल ओढ़ाकर अभिनंदन किया एवं छात्रों को पेन, पेंसिल, कॉपी जनित कीट प्रदान किया और स्कूल विकास के लिए 21 हजार की राशि भेंट की। यही नहीं 09 अप्रेल को अपनी जन्मभूमि बड़ीसादड़ी के सभी ओसवाल जैन समाजजनों को पंचायती नोहरे में प्रीतिभोज दिया जिसमें बाहर रह रहे सगे-समधियों एवं परिवारजनों ने सोल्लास भाग लेकर सुमित्राजी के दीर्घ स्वस्थ एवं सुखी जीवन की कामना की।

उल्लेखनीय है कि आमल्या बावजी वर्तमान में नीम वृक्ष के नीचे स्थापित हैं। भोपाजी का नाम भग्गाजी गायरी है। प्रति शनिवार चौकी लगती है और नागदेवता का देवरा है। खरा यानी सच्चा न्याय होने के कारण गांव का नाम ही खरदेवला पड़ा।

- राधा पोरवाल

स्मृतियों के शिखर (162) : डॉ. महेन्द्र भानावत

भारतीय वांग्मय में जैन लोकसंस्कृति का अवदान

जैनियों का जीवन धार्मिक तानेबाने से गूंथा हुआ होता है। व्रत, उपवास, अनुष्ठान, तपस्या, ईश- आराधना एवं अन्यान्य धार्मिक क्रियाकलापों तथा विश्वासों में समर्पित भाव से अपने तन-मन-धन को लगाने में ही उन्हें आनंद की प्राप्ति होती है। साहित्य, संगीत, संस्कृति एवं कला के उन्नयन तथा प्रचार-प्रसार में जैनियों का योग सर्वाधिक रहा। जैन ग्रंथ भंडारों में संरक्षित विपुल एवं समृद्ध सामग्री को यदि विस्मृत कर दिया जाए तो हमारे इतिहास की सांस्कृतिक पीठिका का नक्शाही नगण्य हो जाएगा।

अब तक की खोजों के अनुसार संसार की प्राचीन से प्राचीनतम कलाओं के उदाहरण भित्तिचित्रों के ही प्राप्त हुए हैं। ये भित्तिचित्र चाहे पुरातन गुफाओं के हों, चाहे धर्मस्थानों, राजप्रासादों अथवा सेठ श्रीमंतों की हवेलियों के, कलात्मक अंकनों में सर्वाधिक महत्व इन्हीं भित्तिचित्रों का रहा है। प्राचीन ग्रंथों में ऐसे वर्णन भी मिलते हैं जबकि श्रेष्ठिजन अपने उद्यानों में विविध प्रकार की काष्ठ, प्रस्त, चित्र तथा लेप्य कारीगरी से आलीशान चित्रशालाएं बनवाते थे। श्रुतांग नाया धम्म कहाजो (13,99) में मणिकार श्रेष्ठिनंद राजगृह के उद्यान एक भव्य चित्रशाला बनवाता है जिसमें वह नाना प्रकार की लकड़ी, चूना, सीमेंट, रंग व मिट्टी तथा विविध प्रकार के द्रव्यों से सैकड़ों स्तम्भ एवं मांगलिक आकृतियों का निर्माण कराता है। जैनियों के कारण ख्याल तमासा करने, बजाने, गाने, नाचने से लेकर जादुई करतब दिखाने तथा मन बहलाव करने वाले कलाकारों को पोषण मिला।

मंदिरों का निर्माण पूरे विधि विधान से होता है। उसमें जरा भी खामी कई अनिष्टों का घर समझा जाता है। ऋषि-मुनि संत-महात्माओं की इच्छा-आकांक्षा के बिना एक पत्थर तक नहीं रखा जाता। यदि कभी कोई कमी देखी जाती तो तत्काल उस ओर ध्यान दिला दिया जाता और यदि उसमें सुधार नहीं होता तो संत, महात्मा, यति आदि उखड़ जाते जो व्यवधान ही डालते और मंदिर निर्माण का कार्य रुकवा देते। ऐसे उदाहरण भी देखने को मिलते हैं जब मंत्र-बल से आधा, अधूरा, पूरा बना बनाया मंदिर ही वहां से उड़ाकर कहीं अन्यत्र लेजाकर पटक दिया गया।

देलवाड़ा मंदिर की कलात्मक प्रस्तर कला विश्व की अद्वितीय एवं अतुलनीय कला ही नहीं अपितु कारीगरी की अन्यतम, उत्कृष्टतम संरचना भी है जो अपने भव्य एवं दिव्य परिवेश में मृत्युलोक पर स्वर्गिक उपहार कहा जा सकता है। मंदिर-शिल्प एवं वास्तुकला की दृष्टि से जो कारीगरी यहां देखने को मिलती है उसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि विश्व की जो भी सर्वोत्कृष्ट सौंदर्यमूलक कला थी वह सब मूर्ति निर्माताओं ने यहां उड़ेल दी। कुछ लोग तो यहां की वास्तुकला से इतने अभिभूत हुए कि उन्होंने इसे मानव निर्मित कला की बजाय देवताओं का ही आश्चर्यजनित चमत्कार कहा।

रणकपुर का जैन मंदिर अपने अगिनित खम्भों के कारण कला का उत्कृष्ट वैभव बना हुआ है। चित्तौड़ के कीर्तिस्तम्भ के निर्माण में मूलत: छोगमल का हाथ रहा। यह पक्का जैनी और पवित्रात्मा वाला सेठ था। पाप से बचने के खातिर इन्होंने चाकू तक से कभी सब्जी तक नहीं काटी पर जब कीर्तिस्तम्भ के पास वाले मंदिर पर मुगल चढ़ आए तो इन्होंने अपने हाथों में तलवार धारण कर देखते-देखते तीन सौ का सफाया कर दिया। भामाशाह की दानवीरता तो जग जाहिर है ही पर वे युद्धवीर भी कम नहीं थे। काष्ठ कलाओं के संरक्षण में भी जैनियों ने कमाल हासिल किया। विविध नृत्य-मुद्राओं तथा वाद्य वादन करती देव दासियों के सुंदर कलात्मक अंकन मंदिरों में तथा घरों में पूजा के साथ-साथ सजावट के भी प्रसाधन बने।

चल मंदिर के रूप में आठ अथवा दस कपाटों की बनी कावड़ रंग-बिरंगे धार्मिक चित्रों की ही चित्रशाला है। भगवान महावीर की कावड़ में चौबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी के आदर्शमय जीवन की चित्रावली के साथ-साथ अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह जैसे विश्वव्यापी सिद्धांतों की सजीव घटनाओं का दिग्दर्शन श्रोत्रा एवं दर्शकों को धर्म और अध्यात्म जीवन जीने की प्रेरणा देता है।

देवीलाल सामर ने भारतीय लोककला मंडल के माध्यम से लोक संस्कृति से जुड़ी कई विधाओं को पुनर्जीवन दिया। कठपुतली कला के प्रदर्शन में तो इन्होंने 1965 में बुखारेस्ट में विश्व का प्रथम पुरस्कार प्राप्त कर सबको अचरज में डाल दिया। सामरजी द्वारा निर्मित कठपुतली की महावीर नाटिका का निर्माण एवं मंचन भी अपने आप में महत्वपूर्ण घटना है। उन्होंने आचार्य तुलसी की प्रेरणा पाकर अणुव्रत के सिद्धान्तों पर देश-विदेश में धागा तथा दस्ताना पुतलियों के प्रदर्शनों द्वारा आम लोगों की जीवनधर्मिता को जैनधर्म एवं दर्शन के अनुकूल बनाने का प्रभावी कार्य किया।

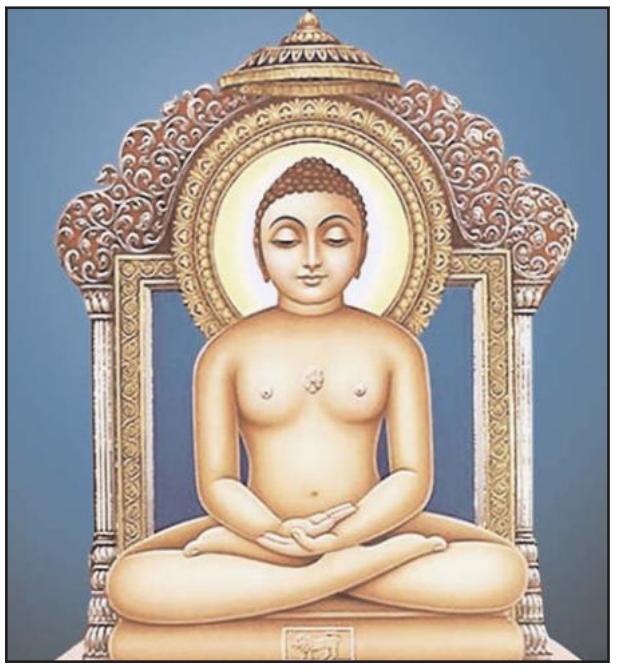

लोकसाहित्य के संरक्षण में जैनियों का कम योग नहीं रहा। पवाड़े, फागू, चर्चरी, रास, हीयाली आदि की विपुल रचनाकर इन्हें विकसित और संरक्षित किया। महाराणा कुम्भा के सम्मानित गुरु हीरानंद सूरि पहुंचे हुए जैन कवि थे जिन्होंने सं. 1485 में विध्याविलास पवाड़ा बनाया जो लोककथा संबंधी राजस्थानी का पहला काव्य माना जाता है। सुप्रसिद्ध प्रेमाख्यान ढोलामारू के प्राचीन दोहों को एकत्र कर ढोलामारू की चौपाई की रचना की। इसी प्रकार कवि हीरकलश की सिंहासन बत्तीसी, हेमानंद की बैताल पचीसी तथा भोजचरित्र चौपाई भी लोककथाओं पर आधारित है। राजा विक्रम की लोककथाओं संबंधी रास की रचना में मंगल माणिक्य ने विशेष नाम कमाया। समयसुंदर, राजलाभ, महिमसमुद्र, हीरकलश, हेमानंद, समयप्रमोद, ज्ञानविलास, जिनहर्ष, जयनिधान, धर्मसी, हंसप्रमोद, देपाल आदि कवियों का हीयाली लेखन साहित्य की उत्कृष्ट धरोहर बना हुआ है।

धर्मस्थानों में कई विधाओं में लोकसाहित्य की परिव्याप्ति देखने को मिलती है। इनमें साधु-साध्वियों के स्वागत-अभिनंदन से संबंधित बधावे गीत, तीर्थंकरों से संबंधित सपने, चौबीसियां, पालणे, थोकड़े, चौक, गरभचिंतारणियां, ढालें, चरित्र तथा कथा-आख्यान बड़े प्रभावी रहे हैं। जैनियों के सम्पर्क, सान्निध्य एवं संसर्ग में आकर इतर जातियां भी जैनत्व के सिद्धान्तों तथा जीवन व्यवहारों को अपनाने में दीक्षित हुई। नवरात्रा में लोक देवी-देवताओं के स्थानक विशेष (देवरे) में ढाक नामक वाद्य के सहारे जो भारत नामक गाथा गाई जाती है उसमें वेला वाणिया (बनिया) का भारत भी अपनी भूमिका रखता है।

लेख लिखने के आधारपत्रों का भी अपना एक कलात्मक इतिहास है। इन आधारों में वल्कल, काष्ठ, दंत, लौह, ताम्र, रजत आदि का उल्लेख प्राप्त होता है। इन पर लेखन की पद्धतियां भी कई थीं। इन पद्धतियों में अक्षर खोदकर लिखने की उत्कीर्णन पद्धति, सी कर लिखने की स्यूत पद्धति, बुन कर लिखने की व्यूत पद्धति, छेद कर लिखने की छिन्न पद्धति, भेद कर लिखने की भिन्न पद्धति, जला कर लिखने की दग्ध पद्धति तथा ठप्पा देकर लिखने की संक्रांतित पद्धति विशेष रूप में प्रचलित थी। महीन से महीन लेखन लिखने की कला में भी जैन साधुओं का योगदान सर्वोपरि रहा है।

नाटकों तथा ख्याल-तमाशों के क्षेत्र में भी जैनियों का उल्लेखनीय योग रहा है। भगवान महावीर के समय में भी धार्मिक नाटकों का बहुत जोर था। देवसूर्याभ नामक उनके एक भक्त ने स्वयं उनके सम्मुख एक समय बत्तीस प्रकार के नाटक खेले थे। रायपसेणीय नामक उपांगसूत्र में आमलकप्पा नामक नगरी में प्रदर्शित किए जाने वाले इन नाटकों का बड़ा ही सुंदर वर्णन मिलता है। रास, चर्चरी, फागु संज्ञक काव्य ग्रंथों में भी इनका उल्लेख मिलता है। ये नाटक गेय एवं अभिनय होते थे जो किन्हीं मांगलिक प्रसंगों, उत्सवों, गुरु आगमनों तथा मंदिर की प्रतिष्ठा के अवसरों पर खेले जाते थे। प्रदर्शकों के साथ-साथ दर्शक भी एकरस होकर उनके साथ भागीदारी निभाते थे। खेलों में डंडियों का तथा नृत्य के समय तालियों का बड़ा जोर था। स्त्रियां भी इनमें भाग लेती थी।

उदयपुर में भी ख्याल-तमाशों का एक समय बड़ा जोर था। जसवंतसागर ने अपने उदयपुर वर्णन में इनका बड़े विस्तार से उल्लेख किया है। उसने तो यहां तक लिखा- दूहा दसरावे दीवाली पै तमाशा गणगौर/ एसहु उदयापुर पछै ख्याल नहीं इन ठौर॥ मैंने स्वयं ने भी धर्मस्थानों में प्रचलित जैन लोकसाहित्य की विविध विधाओं का संकलन कर कई आलेख लिखे और प्रकाशित करवाये। भगवान महावीर के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं तथा अन्य धार्मिक प्रसंगों पर कठपुतली नाटिकाएं भी लिखीं जो मंचित और प्रकाशित हुई । गंधर्व जाति के लोग अपने सभी ख्याल जैन मंदिरों अथवा जैनियों की बस्ती में ही करते हैं। भीलों में प्रचलित गवरी के अभिनेताओं पर जैनधर्म का व्यापक प्रभाव देखने को मिलता है। भाद्र माह में गवरी रमते समय वे एक समय भोजन करते हैं। हरी सब्जी का त्याग रखते हैं। पांव में न जूते पहनते और आंगन में सोते हैं। पूर्ण रूप से ब्रह्मचारी और तपस्वी जीवन जीते हुए संयमपूर्ण आराधक बने रहते हैं।

जैनियों में कई अच्छे लेखक भी हुए हैं जिन्होंने पारम्परिक रंगतों में ख्यालों की उत्कृष्ट रचना की। इनमें डालू अगरवाला का ध्रुवजी का ख्याल, नाथूलाल अगरवाल का लिखित खींवे आभलदे, देवर-भौजाई, विक्रमादित्य तथा चौबीली राणी का ख्याल, लाला पारसीमल का राजारिसालू का ख्याल, सुंदरलाल का नरसीभगत का ख्याल, रामदास बनिया का शनिश्चर महाराज का मारवाड़ी ख्याल तथा रामरतन दरक का जगदेव कंकाली का ख्याल लोककंठों पर अत्यंत लोकप्रिय है। उदयपुर के खैरादियों ने फूलदानों पर श्रीनाथजी, चारभुजा और महाराणा के चित्रों के साथ मुनिश्री चौथमलजी के चित्र बनाने प्रारम्भ कर दिए। ये चित्र कलई के बनते जो सोना-चांदी जैसी चमक लिए होते।

जैन पांडुलिपियों, ताड़पत्रों तथा मंदिरों में दीवाली पर जो चित्र मिलते हैं, उनमें नंदीश्वरद्वीप, अढ़ाई द्वीप, लोकस्वरूप, तीर्थंकरों के जीवनाख्यान, उनकी बारात, उनके स्वप्न, उपसर्ग, समवसरण, आहार, दान तथा कर्म सिद्धांत विषयक चित्र बहुलता लिए होते हैं। चित्र, लिपि, पातरा, टोक्सी, सिलाई तथा बुनाई आदि की दृष्टि से तेरापंथी साधुओं की अपनी विशेष परम्परा, कला तथा शैली रही है। सुंदर तथा सूक्ष्म लिपि के रूप में एक सूत्राकार पन्ने में लगभग 80 हजार अक्षरों की स्पष्ट लिखावट देखकर सहसा यह विश्वास नहीं होता कि कलम की सहायता से इतनी बारीक लिपि भी लिखी जा सकती है, जिन्हें सौ-सौ आंखें भी आसानी से नहीं पढ़ पाती हैं। काष्ठ के बने रंगबिरंगी पातरों तथा काचली की बनी टोक्सियों पर महीन लिपि के रूप में निकाली गई फूल, पत्तियां, बेलबूटे तथा प्राकृतिक दृश्यों की छटा देखते ही बनती है। आचार्य जीतमलजी महाराज अच्छे कवि एवं लेखक के साथ अच्छे चित्रकार थे। ये न केवल दोनों हाथों से अपितु अपने दोनों पांवों से भी कमाल के चित्र बनाते थे। जैन कथा चरित्रों, ढालों तथा आख्यानों को लेकर इन्होंने कई चित्र बनाए।

भगवान महावीर के 2500वें निर्वाण प्रसंग पर भीलवाड़ा के कलाकर्मी निहाल अजमेरा ने राजस्थान की पारंपरिक पड़ शैली में महावीर स्वामी की पड़ तैयार करवाकर एक सार्थक अभिनव प्रयोग किया। बीकानेर के के. सी. बोथरा ने भगवान महावीर स्वामी का 12 गुणा 15 इंच का एक ऐसा गलीचा तैयार कराया जो 56 रंग लिए था।

शब्द रंजन

उदयपुर, शनिवार 15 अप्रेल 2023

सम्पादकीय

बच्चों की खरीद फरोख्त

अखबारों में आये दिन बच्चों के खरीद फरोख्त के समाचार निश्चय ही न केवल दिल दहलाने वाले हैं अपितु हमारे सामाजिक जीवन पर लगने वाला घिनौना एवं संवेदनहीन कालिख पोतता कलंक भी है।

झारखण्ड के चतरा में जिस बच्चे को साढ़ा चार लाख में बेच दिया गया उसकी मां को तो मात्र एक लाख रूपये हाथ लगे, शेष साढ़ा तीन लाख रूपये बिचौलिये डकार गये। यह तो ठीक रहा कि इसकी खबर पुलिस को मिलने पर न केवल बच्चा मिला, कई आरोपी भी पकड़े गये।

बच्चों के साथ ऐसी अमानवीय घटनाएं और भी सुनने को मिलती हैं। उन्हें भीख मांगने को मजबूर किया जाता है। इस हेतु उन्हें अपंग बनाने का खतरनाक काम भी होता है ताकि उनकी हृदयद्रावक स्थिति देख उन्हें ठीक-सी भीख मिल सके।

यही नहीं, आतिशबाजी निर्माण के धंधे में बच्चों से बुरी तरह बेगार लिया जाता है वहीं तंत्र-मंत्रादि के टोटकों में मासूम बच्चों का उपयोग कम दर्दीला नहीं सुना गया। ऐसे और भी अनेक क्षेत्र हैं जहां बच्चों का शोषण, उनके प्रति दुर्व्यवहार, अमानवीयता, अत्याचार और अनाचार की घटनाएं सुनने को मिलती हैं।

बच्चे परिवार की ही नहीं, समाज और राष्ट्र की अनमोल धरोहर कहे गये हैं। राष्ट्र निर्माण में उनकी अहम भूमिका के बखान भी आये दिन बहुत सुनने को मिलते हैं। इन सारे सन्दर्भों में जो भी लोग सम्मिलित हैं क्या उनके बच्चे नहीं हैं? क्या वे अपने बच्चों के प्रति लापरवाह हैं?

किसी भी परिवार के लिए बच्चों की क्या अहमियत होती है, उनसे पूछिये जिनके बच्चे नहीं हैं। जो नि:संतान हैं और बच्चों के लिए न जाने कितने यत्न-प्रयत्न करते हैं। पैसा पानी की तरह बहाते हैं और देव-देवरे या फिर किसी समझेबुझे के पास एक अदद संतान प्राप्ति के लिए भटकते रहते हैं तब हमारा समाज ऐसी विकृत मानसिकता लिए क्यों होता दिखाई दे रहा है?

अकेला झारखण्ड ही नहीं, ऐसे और भी प्रदेश हैं। अखबारों में हर खबर आती ही नहीं। सरकार तो ऐसी घिनौनी प्रवृत्ति के प्रति सख्त से सख्त बने ही पर उन सामाजिकों या परिवारजनों को भी कठोर-से-कठोर सजा का प्रावधान हो ताकि वे ऐसे कुत्सित कर्म करने का साहस नहीं कर सकें।

देवराहा बाबा और मंजूषा मानस

देवराहा बाबा का शीर्षस्थ नेताओं को आशीर्वाद :

मथुरा जिला देवराहा के एक पहुंचे हुए संत थे जो जमुना किनारे लकड़ी के एक ऊंचे मचान पर अपना निवास किये रहते थे। उनके चमत्कारों के अनेक अलौकिक किस्से सामान्यजनों में प्रचलित थे। वे प्राय: मौन साधे रहते। कभीकभाक ही अपनी वाणी देते थे। जब वे अपनी सिद्ध वाणी से जो कुछ बोलते, वह सत्य घटित होती।

सन् 1980 के दौरान मैंने सुना कि बाबा के दर्शनार्थ अनेक लोगों का तांता लगा रहता पर बाबा किसी को कुछ नहीं कहते। अनेक अतिविशिष्ट लोग भी बाबा की ऐसी पहुंच के कायल थे जो समय-समय पर उनके दर्शनार्थ आते। बाबा जब किसी को आशीष देते तो प्राय: हाथ की बजाय अपने पांव का इशारा देते।

एकबार प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्रप्रसाद के पिताश्री ने भी बाबा के दर्शन किये। इन्दिरा गांधी भी वहां आईं तब बाबा ने उन्हें हाथ ऊंचा कर आशीर्वाद दिया। कहते हैं, इससे प्रभावित हो इन्दिराजी ने अपनी पार्टी का चिन्ह ही हाथ रख दिया और वियजश्री भी भारी मतों से प्राप्त की।

ऐसे ही मोरारजी देसाई जब प्रधानमंत्री थे तब बाबा के दर्शनार्थ आये पर बाबा ने आशीर्वाद तो नहीं दिया पर कोई ऐसा संकेत दिया जिसके कारण सात दिन में ही उन्हें प्रधानमंत्री पद से त्यागपत्र देने को विवश होना पड़ा।

राजापुर में संरक्षित मंजूषा में 'मानस' के भोज पत्रक :

उत्तरप्रदेश का राजापुर गोस्वामी तुलसीदास की जन्मस्थली के रूप में बहु प्रतिष्ठित बना हुआ है। यहां एक मन्दिरनुमा पवित्र स्थल है जहां तुलसी रचित रामचरित महाकाव्य के उनकी हस्तलिपि में लिखे भोजपत्रक सुरक्षित एवं संरक्षित हैं। ये पत्रक पुलिस के कड़े पहरे में एक अलंकृत सोने-चांदी की कसीदाकारी से युक्त मूल्यवान मंजूषा में रखे हुए हैं।

सन् 1980 के दौरान मैं मेडीकल ऑफिसर था तब जो भी विशिष्ट-अतिविशिष्ट व्यक्ति उसे देखने आते तब उनके साथ स्वास्थ्य सम्बन्धी विशेष सेवाओं के लिए मेरी उपस्थिति रहती थी। एकबार उत्तरप्रदेश के राज्यपाल महोदय वहां पधारे तब मुझे भी रामचरित मानस के वे भोजपत्रक देखने का सौभाग्य मिला। उनमें रामचरित महाकाव्य के बालकाण्ड के पत्रक नहीं थे। बताया गया कि वे एक समय जोरदार बाढ़ आने पर बह गये थे। राजापुर तब ब्लॉक था। अब जिला बना हुआ है।

– डॉ. पुरुषोत्तमलाल शर्मा

भानावत कुटुम्ब में कृष्ण प्रतिमा

उदयपुर (ह. सं.)। न्यू भूपालपुरा स्थित आर्ची आर्केड के नवीन अपार्टमेंट 904, 'शब्दार्थ, भानावत कुटुम्ब' में बांसुरीवादक भगवान श्रीकृष्ण की सवा फीट की नव्य-भव्य प्रतिमा स्थापित की गई। इसका निर्माण जयपुर स्थित श्याम मूर्ति एम्पोरियम के श्री विष्णुप्रकाशजी शर्मा द्वारा किया गया।

शर्माजी ने बताया कि पिछली तीन पीढ़ियों से उनका परिवार इसी कारोबार से जुड़ा हुआ है। श्रीकृष्ण की मूर्ति मकराना के पत्थर से निर्मित है। मकराने का यह पत्थर पूरे विश्व में प्रसिद्धि लिए है। विश्व के सात आश्चर्यों में गिनित आगरे का ताजमहल भी यहीं के पत्थरों का बना हुआ है। यह पत्थर 'पाणपुआ' नाम से पहचान लिए है। इस पत्थर की यह विशेषता है कि किसी भी प्रकार का दुष्प्रभाव इसे किसी प्रकार का नुकसान नहीं पहुंचा सकता। शर्माजी के अनुसार सर्वाधिक प्रतिमाएं राधा-कृष्ण की बनवाई जाती हैं। बनवाने वाले प्रतिमा का नाकनक्श, भाव, सौन्दर्य आदि अपनी चाह के अनुसार बनवाते हैं। विदेशों में अमेरिका, इंग्लैण्ड आदि में इनकी मांग सर्वाधिक रहती है।

रंजना भानावत ने बताया कि कृष्ण के प्रति बचपन से ही उनका लगाव रहा है। नये निवास में इस प्रतिमा की स्थापना पं. गोपालकृष्ण के द्वारा विधिविधान से की गई।

लोकसंस्कृति का अध्यात्म

-राजेन्द्ररंजन चतुर्वेदी-

वेद में कहा गया है -संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्...(ऋग्वेद 10-191-2अथर्व 6-64-1)

हम एक दूसरे के साथ-साथ चलें। हम एक दूसरे से संवाद करें। हम एक दूसरे के मन को जानें। उसका अनुभव करें। व्यक्ति का व्यक्ति से, व्यक्ति का समष्टि से, और एक समष्टि का दूसरी समष्टि से संवाद चलता ही रहता है। उनकी मैत्री स्थापित होती है।

राष्ट्रीय एकीकरण का भाव विकसित होता है। यह लोकसंस्कृति की प्रक्रिया है। लोकसंस्कृति विभिन्न समुदायों की साझा विरासत है। उसमें सबकी सहभागिता है। उसकी अविच्छिन्न परंपरा है। विश्वव्यापी मानवीय संवेदनाएं हैं। ये सहज संवेदना हैं। इनमें अपना-पराया का वर्गीकरण नहीं है। संस्कृति मनुष्य और मनुष्य के बीच में रिश्ता बनाती है। मनुष्य और प्रकृति के बीच में एक रिश्ता बनाती है। इसी का नाम सामाजिक-प्रक्रिया है। यही समष्टीकरण की प्रक्रिया है। यही लोकसंस्कृति है।

अध्यात्म भारत की लोकसंस्कृति का अंग है। अध्यात्म क्या है? अध्यात्म ऐसी कोई बात नहीं है, जो जिंदगी से दूर हो। अध्यात्म कोई ऐसी बात नहीं है कि जिसके लिए जंगल में जाना पड़े। असल में दूसरे के सुख में अपने सुख का जो अनुभव है, दूसरे को अपना बनाने की जो प्रक्रिया है, वही अध्यात्म है। विविधता में समानता का भाव, अनेकता में एकता अथवा अद्वैत का भाव यह अध्यात्म ही तो है। पूरी प्रकृति उसका अपना परिजन है यह अध्यात्म है। अध्यात्म एक व्यक्ति की चेतना को दूसरे व्यक्ति की चेतना से जोड़ता है। प्रकृति के प्रत्येक जीव में एक चेतना का अनुभव करना अध्यात्म है - धरती माँ है। नदी मां है। चंदा मामा है।

पंडित विद्यानिवास मिश्र ने इसे मानवस्वभाव कहा था, जो भीतर-भीतर सब को जोड़ता रहता है। एक महाद्वीप को दूसरे महाद्वीप से, एक चेतना को दूसरी चेतना से। गांव के लोग तीर्थ के लिए चलते हैं तो घर-घर से अक्षत आते हैं। हमारी ओर से भी एक अक्षत ले जाओ। अक्षतों के माध्यम से पूरा गांव तीर्थ यात्रा करता था।

कोई पैदल तीर्थ यात्रा करके आता था तो उसके पैर पकड़ने के लिए पूरा गांव जुट जाता था। अध्यात्म मनुष्य की प्रतिष्ठा और उसकी मूलभूत एकता में है। अध्यात्म साधारण धर्मिता में है। अध्यात्म विश्वव्यापी मानवीय संवेदना में है। लोकसंस्कृति के व्यापक भाव में धर्मसंप्रदाय मजहब जाति की दीवारें गिर जाती हैं। अध्यात्म अर्थात सर्वमंगल भाव, अध्यात्म अर्थात? सर्वात्म भाव। हरे पेड़ को मत काटना, जल दिव्य शक्ति है, उसे गंदा मत करना, फलदार वृक्ष को काटा नहीं जाता, रात्रि में वनस्पति शयन करते हैं, इसलिए फूल-पत्तियों को नहीं तोड़ा जाता है, लोकसंस्कृति का अध्यात्म यही है।

एक व्यक्ति का जन्म और पोषण जिस सांस्कृतिक परम्परा में हुआ है, वह सांस्कृतिक परम्परा जीवन के संदर्भों को देखना सिखाती है। जीवन और उसके प्राकृतिक और सामाजिक परिवेश को देखने, समझने और व्यवहार करने की दृष्टि प्रदान करती है। लोकसंस्कृति प्रशिक्षण देती है -ऊंच-नीच मत सोचे तोकों ऐसौ राम दबोचै। लोककथा, लोकनृत्य उसकी इस प्रक्रिया का हिस्सा बनते हैं। अनेक प्रकार के नाटकों का सहारा लिया जाता है, जैसे सत्य हरिश्चंद्र का नाटक है, सत्यवान सावित्री का नाटक है या कृष्ण और सुदामा का संदर्भ है। इसी प्रकार लोकोक्ति है- पुण्य की जड़ सदा हरी। एक गीत है- देख पराई नार मन न डुलाइयै हो माय, जो मन डिगुलनहार बहना कहि कें बोलिए हो माय।

लोकसंस्कृति प्रकृति और मनुष्य के सम्बन्ध का निर्धारण करती है। सामाजिक सम्बन्धों का निर्माण करती है। असल बात तो यह है कि वह पशु को मनुष्य बनाती है। सामाजिक बनाती है। लोकसंस्कृति व्यक्ति की जो मूल प्रवृत्तियां हैं, उनका समायोजन करके उसे सामाजिक बनाती है। परिस्थिति और पात्र के अनुसार मनुष्य की मूल प्रवृत्तियों का संयमन-नियमन दमन और उन्नयन करती है।

समाज और प्रकृति से जीवनी शक्ति ग्रहण करने की शक्ति को प्रभावित करती है। लोकसंस्कृति प्रेम मैत्री करुणा मुदिता और उपेक्षा जैसे भावों का विकास करती है। लोकसंस्कृति सामाजिक विवेक की प्रतिष्ठा करती है। उचित -अनुचित, पाप- पुण्य का विवेक जगाती है। जीवन के प्रयोजन का प्रतिपादन करती है जीवनमूल्यों का सम्मान करती है। लोकसंस्कृति में मनुष्यता की प्रतिष्ठा है। लोकसंस्कृति में न्याय की प्रतिष्ठा है। लोकसंस्कृति में सर्वमंगल भाव की प्रतिष्ठा है।

एचडीएफसी बैंक के बेहतर कार्य परिणाम

उदयपुर (ह. सं.)। एचडीएफसी बैंक लिमिटेड के निदेशक मंडल ने मुंबई में हुई बैठक में 31 मार्च, 2023 को समाप्त तिमाही और वर्ष के लिए बैंक (इंडियन जीएएपी) के परिणामों को मंजूरी दी। खातों को बैंक के सांविधिक लेखापरीक्षकों द्वारा लेखापरीक्षा के अधीन किया गया है।

31 मार्च, 2023 को समाप्त तिमाही के लिए बैंक का समेकित शुद्ध राजस्व 20.3 प्रतिशत बढक़र 34,552.8 करोड़ रुपये हो गया, जो 31 मार्च, 2022 को समाप्त तिमाही के लिए 28,733.9 करोड़ रुपये था। 31 मार्च, 2023 को समाप्त तिमाही के लिए समेकित शुद्ध लाभ 12,594.5 करोड़ रुपये था जो कि गत मार्च को समाप्त तिमाही के मुकाबले 20.6 प्रतिशत की वृद्धि के साथ रहा। 31 मार्च, 2023 को समाप्त तिमाही के लिए प्रति शेयर आय 22.6 रुपये थी और प्रति शेयर बुक वैल्यू 518.7 रुपये थी। 31 मार्च, 2023 को समाप्त वर्ष के लिए समेकित शुद्ध लाभ गत मार्च को समाप्त वर्ष की तुलना में 20.9 प्रतिशत अधिक होकर 45,997.1 करोड़ रुपये था। 31 मार्च, 2023 को समाप्त तिमाही के लिए बैंक का शुद्ध राजस्व 21.0 प्रतिशत बढ़कर 32,083.0 करोड़ हो गया, जो गत मार्च को समाप्त तिमाही के लिए 26,509.8 करोड़ रुपये था।

#मॉडल_स्टेट_राजस्थान

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

अब
राजस्थान में
स्वास्थ्य का अधिकार
(Right To Health)

चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना में 25 लाख रुपए तक का नि:शुल्क उपचार, नि:शुल्क दवा एवं जांच योजना, निरोगी राजस्थान अभियान, कोविड के बेहतरीन प्रबंधन सहित गांव-ढाणी तक चिकित्सा सुविधाओं को मजबूत कर राजस्थान स्वास्थ्य के क्षेत्र में मॉडल स्टेट बनकर उभरा है। अब हमने इन योजनाओं का लाभ प्रदेश की जनता को कानूनी गारंटी प्रदान करते हुए स्वास्थ्य का अधिकार के रूप में प्रदान किया है। यह एक प्रगतिशील कानून है जो संविधान के अनुच्छेद 47 और अनुच्छेद 21 के अनुरूप स्वास्थ्य के अधिकार की गारंटी देता है। मेरी अपेक्षा है कि देश के हर नागरिक को स्वास्थ्य का अधिकार मिले।

अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री, राजस्थान

बेहतर स्वास्थ्य के लिए वर्तमान में संचालित योजनाएं

मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना

25 लाख

रुपए का नि:शुल्क स्वास्थ्य बीमा
साथ में 10 लाख रुपए का दुर्घटना बीमा

मुख्यमंत्री निःशुल्क निरोगी राजस्थान योजना

समस्त इलाज नि:शुल्क

सभी राजकीय चिकित्सा संस्थानों में इनडोर, आउटडोर,
समस्त प्रकार की जांचें, दवाई सहित

राजस्थान सरकार स्वास्थ्य योजना (RGHS) के तहत राज्य के कार्मिकों एवं पेंशनर्स को कैशलेस चिकित्सा सुविधा।

अब प्रदेशवासियों को मिली निःशुल्क स्वास्थ्य योजनाओं की कानूनी गारंटी स्वास्थ्य का अधिकार (RTH)

स्वास्थ्य का अधिकार बिल के महत्वपूर्ण प्रावधान

- राजकीय एवं डेजिग्नेटेड निजी चिकित्सा संस्थानों में ओपीडी, आईपीडी, सलाह, दवाइयां, जांच, परिवहन, प्रक्रिया, आपातकालीन केयर निःशुल्क।
- डेजिग्नेटेड अस्पताल में आपातकालीन उपचार के बाद यदि मरीज अस्पताल को भुगतान नहीं करता है तो सरकार उसका पुनर्भरण करेगी।
- दवा प्राप्त करने या जांच करवाने के स्थान को चुनने का अधिकार।
- पुलिस रिपोर्ट प्राप्त नहीं होने पर भी इलाज।
- इलाज के बारे में पूरी जानकारी लेने का अधिकार।
- इलाज के बारे में किसी दूसरे डॉक्टर या अस्पताल से राय लेने का अधिकार।
- एक्ट में शिकायत निवारण तंत्र का भी प्रावधान।
- डेजिग्नेटेड अस्पतालों को समय पर भुगतान के लिए ऑटो अप्रूवल का प्रावधान।
- प्राधिकरण के निर्णय के विरूद्ध सिविल न्यायालय में जाने का अधिकार।

RTH में समस्त सरकारी चिकित्सा संस्थानों के साथ ही डेजिग्नेटेड निजी चिकित्सा संस्थान शामिल हैं।
डेजिग्नेटेड अस्पतालों का दायरा चरणबद्ध तरीके से बढ़ाया जाएगा।
RTH में शामिल डेजिग्नेटेड निजी अस्पतालों को अतिरिक्त सुविधाएं दिया जाना प्रस्तावित।

स्वास्थ्य के अधिकार के प्रभावी क्रियान्वयन में चिकित्साकर्मियों एवं चिकित्सकों की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसलिए RTH में इनके सम्मान से जुड़े प्रावधान रखे गए हैं, साथ ही अस्पतालों, चिकित्सा कार्मिकों तथा नागरिकों के अधिकार, कर्तव्यों एवं दायित्वों का भी उल्लेख किया गया है। हम सबका दायित्व है कि चिकित्साकर्मियों का सम्मान करें।

राजस्थान चिकित्सा परिचर्या सेवाकर्मी और चिकित्सा परिचर्या सेवा संस्था (हिंसा व संपत्ति के नुकसान का निवारण) अधिनियम, 2008 और SOPs 29 मई 2022 के द्वारा चिकित्सकों को सुरक्षा।

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

राजस्थान संवाद

बाजार / समाचार

एचडीएफसी बैंक ने शुरू किया 'कार-लोन मेला'

उदयपुर (ह. सं.)। भारत के अग्रणी निजी क्षेत्र के बैंक एचडीएफसी बैंक ने राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और विदर्भ सहित महाराष्ट्र के कई हिस्सों में एक बड़े 'कार-लोन मेला' अभियान की शुरुआत की घोषणा की। 400 से अधिक शाखाएं 15 अप्रैल को ऋण अभियान की मेजबानी करेंगी, जहां कार डीलर अपने ऑटोमोबाइल मॉडल प्रदर्शित कर सकते हैं और बैंक मौके पर ही ऋण प्रदान करेगा। एचडीएफसी बैंक ने इसके लिए अग्रणी ऑटोमोबाइल ब्रांड और क्षेत्रीय डीलरशिप के साथ साझेदारी की है। 'कार-लोन मेला' शाखाओं में आने वाले ग्राहकों और गैर-ग्राहकों दोनों के लिए खुला रहेगा। वे प्रदर्शन पर कारों को देख सकते हैं और क्रेडिट प्राप्त कर सकते हैं। 'कार-लोन मेला' ड्राइव की कल्पना विशेष रूप से अर्धशहरी और ग्रामीण स्थानों में ऑटोमोबाइल फाइनेंस की आसान पहुँच प्रदान करने के लिए की गई है।

एक्सॉनमोबिल के ल्यूब्रीकेंट मैन्युफैक्चरिंग प्लांट की स्थापना भारत में

उदयपुर (ह. सं.)। एक्सॉनमोबिल महाराष्ट्र औद्योगिक विकास निगम के रायगढ़ स्थित इसाम्बे औद्योगिक क्षेत्र में एक ल्यूब्रीकेंट निर्माण संयंत्र बनाने के लिए लगभग 900 करोड़ रुपये (110 मिलियन अमरीकी डालर) का निवेश कर रहा है। कंपनी ने उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस, उद्योग मंत्री उदय सामंत एवं महाराष्ट्र के वरिष्ठ अधिकारियों की मौजूदगी में यह घोषणा की। परिचालन शुरू होने पर, इस प्लांट में वर्ष में 159,000 किलोलीटर ल्यूब्रीकेंट्स तैयार करने की क्षमता है, जिससे औद्योगिक क्षेत्रों जैसे निर्माण, इस्पात, बिजली, खनन, यात्रा एवं वाणिज्यिक वाहनों की बढ़ती घरेलू मांग को पूरा किया जाएगा। यह प्लांट वर्ष 2025 के अंत में शुरू होने की उम्मीद है।

भारत में एक्सॉनमोबिल एफिलिएट्स के लीड कंट्री मैनेजर मोंटी डॉब्सन ने कहा कि महाराष्ट्र भारत का सबसे बड़ा निर्माण केंद्र है और शानदार निवेश वातावरण होने के कारण हमारे ल्यूब्रीकेंट प्लांट की स्वभाविक पसंद है। 'मेक इन इंडिया' पहल को पर्याप्त बढ़ावा देने हेतु, स्थानीय स्तर पर यह प्लांट मूल स्टॉक, एडिटिव्स और सभी पैकिंग का एक प्रमुख स्रोत होगा। इसके निर्माण चरण के दौरान लगभग 1,200 पद सृजित होने का अनुमान है।

पॉलीबियन का प्रति उत्सव शुरू

उदयपुर (ह. सं.)। विश्व स्वास्थ्य दिवस के उपलक्ष्य में, पीएण्डजी हेल्थ के पॉलीबियन ने विटामिन बी की कमी के प्रभावी निदान के लिए आवश्यक ज्ञान के साथ बिहार और राजस्थान के भीतरी इलाकों में चिकित्सा बिरादरी को सशक्त बनाने में मदद करने के लिए 'प्रगति उत्सव' की शुरुआत की। इस राइड का लक्ष्य दो महीने की अवधि में 4,500 से अधिक स्वास्थ्य देखभाल पेशेवरों (एचसीपी) तक पहुंचना है। मार्च के मध्य से शुरू हुआ काफिला पूरे बिहार का दौरा करते दरभंगा, मुजफ्फरपुर और पटना के माध्यम से 3 मार्गों को कवर कर पूरे राजस्थान में बांसवाड़ा, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, फतेहपुर, जैसलमेर के क्षेत्रों को कवर करेगा और अप्रैल के अंत में समाप्त होगा। 'पॉलीबियन प्रगति उत्सव' का उद्देश्य विटामिन बी की कमी के संकेतों के बारे में जागरूकता और शिक्षा प्रदान करना है, जिससे सटीक निदान और उपचार के लिए आवश्यक जानकारी के साथ डॉक्टरों को सशक्त बनाने में मदद मिलती है।

कलाल मुख्य संरक्षक तथा जैन सचिव मनोनीत

उदयपुर (ह. सं.)। आर्ची आर्केड रेजीडेंशियल वेलफेयर सोसायटी की बैठक न्यू भूपालपुरा स्थित आर्ची आर्केड सभागार में सम्पन्न हुई। अध्यक्ष डॉ. तुक्तक भानावत ने बताया कि इसमें मुकेश कलाल मुख्य संरक्षक तथा चेतन जैन सचिव मनोनीत हुए। बैठक में आर्ची ग्रुप के निदेशक लोकेश मल्हारा एवं विनीत सरूपरिया ने सोसायटी संबंधित समस्याओं का निराकरण किया। इस अवसर पर हितेश मोगरा, अमित शर्मा, राजेन्द्रसिंह पंवार, दीपेश चौधरी, ए.के. जैन, आनंद मेहता, अदिती मेहता, सोनू शर्मा, निर्मल शर्मा, एकता मोगरा, प्रांजल आर्या आदि उपस्थित थे।

डॉ. सामौर राजस्थानी भाषा परामर्श मंडल में शामिल

उदयपुर (ह. सं.)। साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली के राजस्थानी भाषा परामर्श मण्डल का गठन हो गया है। यह मण्डल आने वाले पांच साल तक साहित्य अकादेमी के राजस्थानी विभाग द्वारा आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की रूपरेखा तय करेगा।

कन्वीनर डॉ. अर्जुनदेव चारण ने इस मण्डल में चूरू की रचनाकार और आलोचक डॉ. गीता सामौर, स. आचार्य राजस्थान विश्वविद्यालय को बतौर सदस्य शामिल किया है। परामर्श मण्डल में हरीश बी. शर्मा, संजय पुरोहित, डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित, डॉ. राजेन्द्रसिंह बारहठ, संजय शर्मा, डॉ. हर्षवर्धन सिंह, कृष्णकुमार आशु और चंदालाल चकवाला को बतौर सदस्य शामिल किया है।

डॉ. दिलीप धींग को आचार्य हस्ती सेवा सम्मान

हैदराबाद। 19 मार्च 2023 को जैनदर्शन के विद्वान डॉ. दिलीप धींग को आचार्य हस्ती फाउंडेशन, हैदराबाद की ओर से आचार्य हस्ती सेवा सम्मान (2022) से सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में झारखंड उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश एवं रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष न्यायाधिपति प्रकाश टाटिया एवं अतिथियों ने डॉ. धींग को शॉल, पगड़ी, प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिह्न और इकतीस हजार की सम्मान राशि के साथ सम्मानित किया। आचार्य आनंदऋषि साहित्य निधि के कार्यदर्शी सुरेश गुगलिया ने प्रशस्तिपत्र का वाचन किया। खचाखच भरे सभागार में न्यायमूर्ति टाटिया ने कहा कि वे अनेक शोध पत्रिकाओं में डॉ. धींग को नियमित पढ़ते हैं। डॉ. धींग को संत और गृहस्थ के बीच की महत्वपूर्ण कड़ी निरूपित करते हुए टाटिया ने कहा कि उनकी उत्कृष्ट श्रुत-साधना उन्हें साहित्यकार से भी उच्चतर और श्रेष्ठतर बनाती है।

फाउंडेशन अध्यक्ष सीए निर्मल सिंघवी तथा महामंत्री श्रीपाल देशलहरा ने बताया कि डॉ. धींग आचार्य हस्ती नामित चार पुरस्कार पाने वाले एकमात्र व्यक्ति हैं। डॉ. धींग ने फाउंडेशन एवं उसकी प्रवृत्तियों ककी जानकारी दी। रत्नसंघ के प्रदेश प्रधान पारस डोसी ने संचालन किया। **-कल्पना सुराणा**

टैलेंटस्प्रिंट और आईआईएम उदयपुर में साझेदारी

उदयपुर (ह. सं.)। इनोवेटिव और ट्रांसफॉर्मेशनल ग्लोबल एडटेक कम्पनी टैलेंटस्प्रिंट ने इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेन्ट (आईआईएम-उदयपुर), के साथ मिलकर बहु वर्षीय, बहु कार्यक्रम साझेदारी की घोषणा की।

भारत का यह अग्रणी बिजनेस स्कूल उच्च गुणवत्ता वाले शोध पर ध्यान केंद्रित करता है। आज के तेजी से विकसित हो रहे व्यावसायिक परिदृश्य में, पेशेवरों के लिए प्रासंगिक बने रहने और अपने करियर में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए डिजिटल प्रबन्धन सिद्धांतों और प्रथाओं में एक ठोस आधार होना अनिवार्य है।

प्रतिस्पर्धा में वृद्धि और हानिकारक टेक्नोलॉजीस के उदय के साथ, व्यवसायों को प्रासंगिक और सफल रहने के लिए इनोवेटिव करने की आवश्यकता है। इसके लिए लीडरशिप और मैनेजमेंट एक्सपर्टीज की आवश्यकता है जो अनिश्चित समय के माध्यम से नेविगेट कर सके और विकास और लाभप्रदता को बढ़ा सके। आज विश्व के तेजी से विकसित हो रहे व्यावसायिक परिदृश्य में, प्रोफेशनल्स के लिए प्रासंगिक बने रहने और अपने कैरियर में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए डिजिटल मैनेजमेंट प्रिंसिपल्स और प्रैक्टीसेज में एक ठोस आधार होना अनिवार्य है।

इस सहयोग के तहत पेश किए जाने वाले पहले दो कार्यक्रमों का उद्देश्य न्यू एज सीनियर मैनेजमेंट प्रोफेशनल्स और प्रोडेक्ट मैनेजर्स की बढ़ती आवश्यकता को पूरा करना है जो डिजिटल फर्स्ट वर्ल्ड में नेतृत्व कर सकते हैं। पहला 12 महीने का सीनियर मैनेजमेंट प्रोग्राम (एसएमपी) है जिसे दस साल से अधिक के कार्य अनुभव वाले मध्यम और सीनियर मैनेजर्स के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह उन मैनेजर्स के लिए डिज़ाइन किया गया है जो सीनियर मैनेजमेंट जिम्मेदारियों के लिए नए हैं या लेने की संभावना है, साथ ही वरिष्ठ कार्यात्मक प्रबन्धन सामान्य प्रबंधन भूमिकाओं में संक्रमण कर रहे हैं।

दूसरा डिजिटल उत्पाद प्रबंधन (एपीडीपीएम) में 6 महीने का उन्नत कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य प्रोडेक्ट मैनेजमेंट में अपना कैरियर बनाने या आगे बढ़ाने के इच्छुक प्रोफेशनल्स के लिए है। यह प्रतिभागियों को हमेशा विकसित होने वाले डिजिटल परिदृश्य में फलने-फूलने के लिए आवश्यक विशेषज्ञता से लैस करेगा।

एरिशा एडु सपोर्ट ने इंटरेक्टिव सत्र का आयोजन किया

उदयपुर (ह. सं.)। वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान के सहयोग से एरिशा एडु सपोर्ट ने अंडरग्रेजुएट छात्राओं के लिए एक इंटरेक्टिव सत्र का आयोजन किया।

एरिशा एडु सपोर्ट की सह-संस्थापक और सीओओ शीतल पुरोहित तथा सह-संस्थापक अंशु परमार ने छात्राओं को भारत या विदेश में पोस्ट-ग्रेजुएशन के विभिन्न अवसरों के बारे में जानकारी दी। छात्राओं ने विदेश यात्रा, लोकप्रिय स्थलों, आवश्यक स्टैंर्डडाइज्ड टेस्टों और विश्वस्तर पर शीर्ष विश्वविद्यालयों में प्रवेश प्राप्त करने के लिए खुद को तैयार करने के बारे में जरूरी जानकारी प्राप्त की।

उल्लेखनीय है कि एरिशा एडु सपोर्ट राणा समूह का एक हिस्सा है, जिसके पास कृषि से लेकर स्पेस टेक्नोलॉजीज तक कंपनियों का एक बहुविषयक समूह है। एरिशा एडु सपोर्ट भारत और विदेशों में प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए छात्रों को व्यापक सलाह सेवाएं प्रदान करने में विशेषज्ञ है। एरिशा में सलाहकारों की टीम छात्रों को अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, जर्मनी, ऑस्ट्रेलिया और सिंगापुर में शीर्ष विश्वविद्यालयों में प्रवेश पाने के लिए विदेशों में अपने अध्ययन को प्राप्त करने में मदद करती है। एरिशा एडु सपोर्ट डिजिटल एसएटी, एसीटी, एपी, आइलेट्स, टॉफेल, पीटीई, ओईटी, जीआरई, जीमैट, टेस्टएस, आईबी/आईजीसीएसई ट्यूटशंस जैसे स्टैंर्डडाइज्ड टेस्टों के लिए प्रशिक्षण प्रदान करता है।

एचडीएफसी बैंक और एक्सपोर्ट इम्पोर्ट बैंक ऑफ कोरिया में एमओयू

उदयपुर (ह. सं.)। एचडीएफसी बैंक ने एक्सपोर्ट इम्पोर्ट बैंक ऑफ कोरिया के साथ 300 मिलियन अमेरिकी डॉलर की क्रेडिट लाइन के लिए एक मास्टर इंटर बैंक क्रेडिट समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। इससे एचडीएफसी बैंक को विदेशी मुद्रा कोष जुटाने में मदद मिलेगी जिसका विस्तार वह कोरिया से संबंधित व्यवसायों तक करेगा।

अरूप रक्षित, ग्रुप हेड, ट्रेजरी, सेल्स एनालिटिक्स एंड ओवरसीज बिजनेस, एचडीएफसी बैंक ने कहा कि कोरियाई एक्जिम बैंक के साथ हमारा समझौता भारत और कोरिया के बीच व्यापार और निवेश प्रवाह को और मजबूत कर देश में अधिक नौकरियां पैदा कर सकता है। समारोह में एक्सपोर्ट इम्पोर्ट बैंक ऑफ कोरिया की टीम चौन-जे ली, महानिदेशक, इंटरबैंक वित्त विभाग के प्रमुख ने भाग लिया।

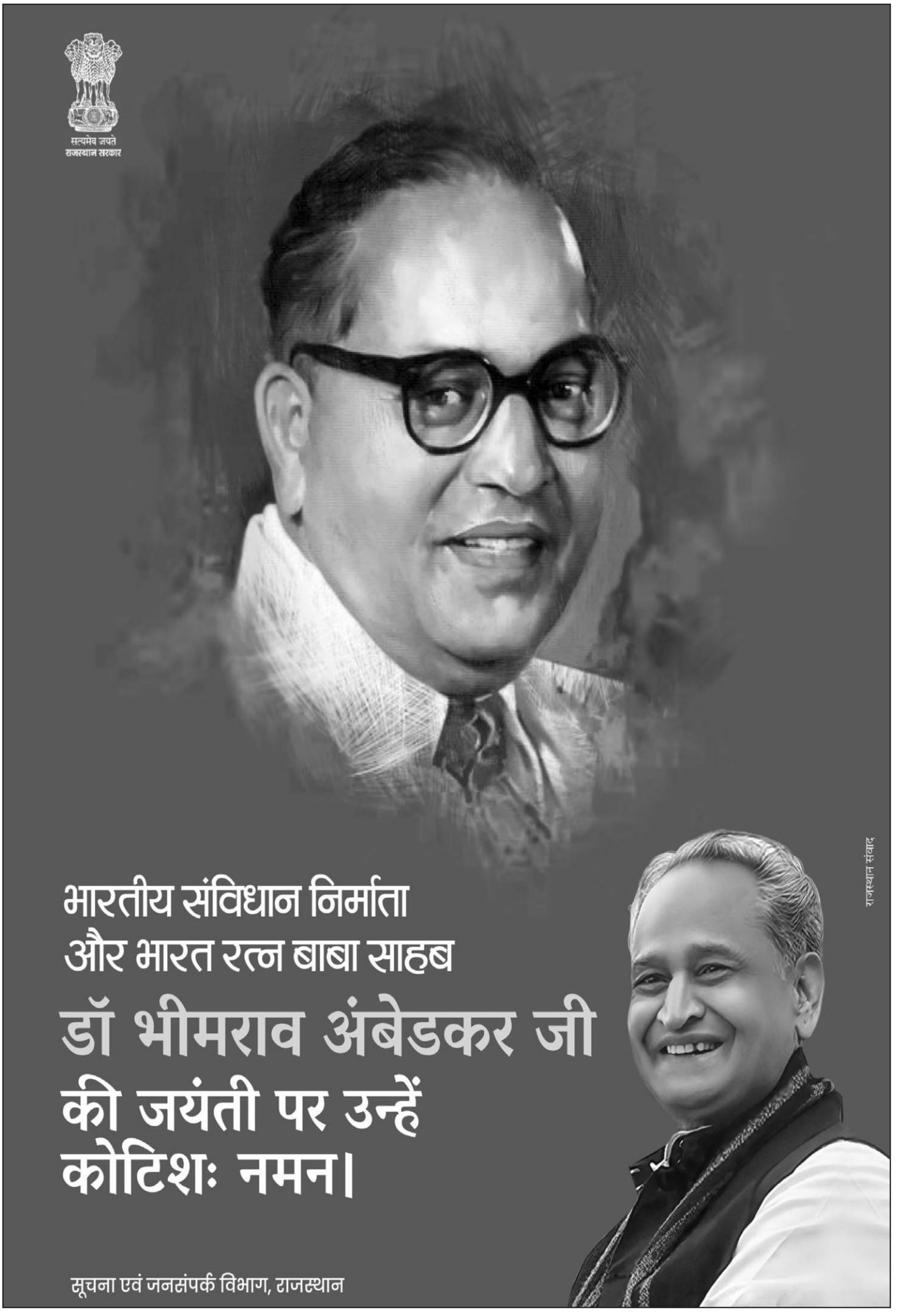
सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार
राजस्थान संवाद
भारतीय संविधान निर्माता
और भारत रत्न बाबा साहब
डॉ भीमराव अंबेडकर जी
की जयंती पर उन्हें
कोटिशः नमन।
सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, राजस्थान

सदी के परम आश्चर्य डॉ. महेन्द्र भानावत

-डॉ. भगवानदास पटेल-

अभी पिछले दिनों ही उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा डॉ. भानावत को 'लोकभूषण' सम्मान स्वरूप ढाई लाख की धनराशि सहित ताम्रपत्र, उत्तरीय, स्मारिकादि प्राप्त होने की खुशखबर पाकर अहमदाबाद के डॉ. भगवानदास पटेल ने प्रस्तुत आलेख भेजा जिसे प्रकाशित किया जा रहा है।

1994 का वर्ष चल रहा था। वर्षा अपना वैभव पृथ्वी पर छोड़ कर जा चुकी थी। हम कोटड़ा तहसील वाले रास्ते उदयपुर जा रहे थे। हमारे साथ उत्तर गुजरात के आदिवासी अंचल से आये सर्वोदय आश्रम के आचार्य और मित्र वीरचन्द पांचाल और उनके सहायक शिक्षक नवजी डाभी भी थे। वे डूंगरी भील आदिवासी हैं। आदिवासी इलाका है। बंसी के सूर मन को भर देते थे। अरावली पहाड़ की प्रकृति यौवन पर थी। प्राकृतिक शोभा के दर्शन से संतृप्त होते हुए उदयपुर आये।

सरोवरों की नगरी उदयपुर में तो स्वर्ण इतिहास लिये अनेक ऐतिहासिक स्थल हैं किन्तु हम तो देहात के निरे लोक ठहरे। अत: हमारे मन में भारतीय लोककला मण्डल प्रगाढ़ बन रहा था और अपने केन्द्र की ओर खींच रहा था।

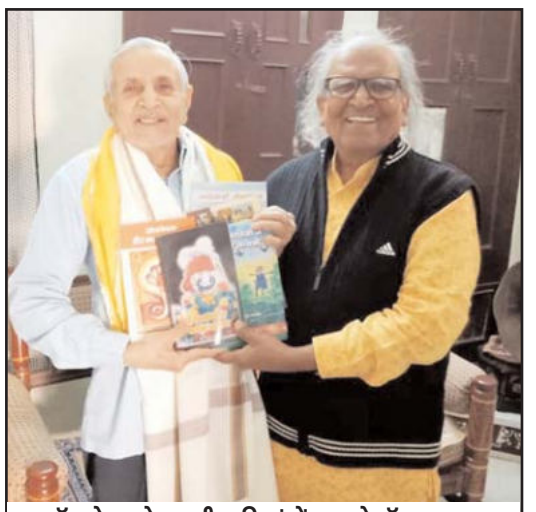

डॉ. पटेल को अपनी कृतियां भेंट करते डॉ. भानावत

दोपहर के बाद हम भारतीय लोकला मण्डल में प्रविष्ट होते हैं। प्रवेशद्वार में इस प्रतिष्ठान के विधायक देवीलाल सामर की श्याम प्रतिमा है। हम उनको वन्दन करके दफ्तर में आते हैं।

ऊंचे आसन पर घुंघराले बाल वाले, वाजिये गेहूं का वर्ण लिये हुए मध्यम कद देही व्यक्ति विराजित हैं। बाहर लगाये बोर्ड से हमें पता चलता है कि ये इस संस्था के महानिदेशक डॉ. महेन्द्र भानावत हैं। उनको नमस्कार करके आसन ग्रहण करते हैं। सामने बैठकर हमारी ओर उनकी ऊंचाई मनोमन नापते हैं।

बाहरी ढंग से तो दोनों की ऊंचाई में ज्यादा फर्क नहीं है। प्राथमिक परिचय से ही उनकी पैनी दृष्टि ने पहचान लिया कि हम 'लोक' के जीवन-दर्शन में रस-रूचि रखने वाले एक ही पंथ के पंथी हैं। लोक प्रतिष्ठान के दर्शन करवाने के लिए तो उनके हाथ के नीचे मार्गदर्शक थे ही, किन्तु हमारे आश्चर्य के बीच स्वयं डॉ. भानावत हमारे मार्गदर्शक बने।

भारतीय लोककला मण्डल क्या है? पूरा जनपदों का लोकजीवन; मूर्तियों, फोटोग्राफ्स, फड़ों, कावड़ों आदि सांस्कृतिक लोकसंपत्ति हमारे चारों ओर मंडराने लगी।

एक माटी की मूरत खण्ड में लोकजीवन के मूलाधार और असंख्य लोकगीतों के आलंबन आधार राजस्थान के धर्मराज, ताखाजी, काला-गोरा भेरू, सांकलिया भेरू, खाकलदेव, कालकामाता, अम्बावमाता, नीमजमाता, नारसिंघीमाता, चोंट जोगनियां आदि देव-देवियां अपना धर्म दरबार भरकर बिराजित हैं। उनके सामने के चित्रों में मैले-चोखे अनुष्ठान विधिविधान हो रहे हैं। आबाल वृद्ध स्त्री-पुरुष उनकी महिमा के गीत गा रहे हैं। पुजारी-भोपे पूरी आस्था के साथ भारी भरकम सांकलें देह पर फटकारते हुए देवी-देवताओं को मना रहे हैं।

दीवार पर टंगी एक फड़ में पाबूजी मण्डप में विवाह का गठबन्धन काट के घोड़े पर सवार होकर गोरक्षा हेतु जा रहे हैं। दूसरी फड़ में पितृओं का बैर लेने के लिए फूल में से आविर्भूत हो रहे हैं। कावड़ के एक-के-बाद-एक कपाट खुलते जा रहे हैं। अन्त में सीता-राम-लक्ष्मण- 'राम पंचायतन' के दर्शन हो रहे हैं।

फोटोग्राफ्स में गुरु गोरखनाथ के शिष्य सिद्ध जाट अग्निनृत्य कर रहे हैं। भवाई जाति का कलाकार अपने सर पर सात-नव मटके रखकर अपने कला-करतब दिखला रहा है। कालबेलिया स्त्रियां विविध मुद्रा में घेरदार घाघरे घुमा रही हैं।

अमरसिंह का खेल खेलने वाली कठपुतलियां अपने खेलों का रूप बदलकर विश्व का प्रवास कर आई हैं। राजस्थान में उच्च वर्ग के लोगों के अलावा 'लोक' की कितनी तो जातियां! नट, सांसी, कंजर, बणजारा, ढोली, भील, मीणा, गरासिया, कालबेलिया आदि। अनेक नृत्यों के कितने तो रूप- गैर, डांडिया गैर, तलवारों की गैर, घूमर, लूर, लूर घूमरा, गैर घूमरा आदि। नृत्यों के साथ जुड़े कितने तो लोकवाद्य- ढोल, नगाड़ा, मादल, थाली, डुगडुगी, तासा, शंख आदि।

भारतीय लोककला मण्डल में नृत्यों के साथ जुड़े लोकवाद्यों के साथ लोग अपनी-अपनी कला दिखला रहे हैं। राजस्थान के भिन्न-भिन्न जनपदों का पूरा लोकसांस्कृतिक वैभव शहरी भीड़भाड़ को पड़कारता हुआ उदयपुर के मध्य में आकर बस गया है।

महेन्द्र भानावतजी लोकजीवन और लोककला की विशेषताओं को पूरी बारीकी के साथ हमारे सामने प्रगट कर रहे थे। अत: तीनों के मुख पर आश्चर्य, आनन्द और अहोभाव झलक रहा था। हमारा सहयात्री भील आदिवासी नवजी डाभी तो अपनी ही सम्पदा को उदयपुर के मध्य में देखकर नाचने लग गया था।

अन्त में भानावतजी ने हमें जलपान के लिए दफ्तर में आमंत्रित किया। चाय की चुस्की लेते-लेते हम सोचने लगे- ''देह से तो वामन लगने वाले इस आदमी ने लोकप्रतिष्ठान को अपने सहकर्मियों को साथ में रखकर अतुल पुरुषार्थ करके विराट रूप दिया है।''

बिदाई के समय नीचे आकर ग्रन्थागार में से लोकसाहित्य विषयक पुस्तकें खरीदीं। इनमें ज्यादातर डॉ. महेन्द्र भानावत लिखित-सम्पादित पुस्तकें थीं।

एक मास के बाद महेन्द्र भानावत साहब का पत्र आया था। वह निम्नांकित है-

दि. 2-2-94, उदयपुर

श्रीयुत् पटेलजी,

वन्दे

आपसे मिलकर, आपसे चर्चा कर बड़ा सुख मिला। गुजराती लोकसंस्कृति का आपने बड़ा ही चकित कर देने वाला कार्य किया है जो बहुत मूल्यवान और स्थायी महत्त्व का है। अत: उससे कई लोग प्रेरणा लेंगे और उस क्षेत्र में कार्य करने को उद्यत होंगे। आपको मैंने अलग से 'उदयपुर के आदिवासी' पुस्तक भेजी है, मिलने पर प्राप्ति भेजें।

-डॉ. महेन्द्र भानावत

फिर तो 1995 के फरवरी मास में पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर द्वारा आयोजित लोकसाहित्य विषयक परिसम्वाद में महेन्द्रजी के साथ कर्णाटक के धर्मस्थल गये थे। उनके साथ राजस्थान के लोकसाहित्यविद् डॉ. पुरुषोत्तमलाल मेनारिया थे। हमारे साथ मध्य गुजरात के आदिवासी लोकसाहित्य के सम्पादक शंकरभाई तड़वी और रेवाबेन तड़वी थे। बुन्देलखण्ड की ओर से डॉ. नर्मदाप्रसाद गुप्त सपत्नी आये थे। महाराष्ट्र और कर्णाटक से भी लोकसाहित्य के विद्वान आये थे।

भिन्न-भिन्न राज्यों के लोकसाहित्य पर चले दो दिन के परिसम्वाद में सही बातों पर शीतल जल बरसाने वाले महेन्द्र गलत बातों पर बिजली की तरह कौंधते थे।

अरावली की पहाड़ियों में आये उदयपुर में प्रथम दृष्टि से ही हमारे और महेन्द्रजी के बीच पनपा स्नेह नेत्रवती नदी की प्राकृतिक लीलास्थली में आये धर्मस्थल के शिव-पार्वती जैसे देव-देवियों के सान्निध्य में प्रगाढ़ मैत्री में परिणत हो चुका था।

कर्णाटक के लोकसाहित्य के यात्रा-स्थल जैसे हम्पी तक तो हम साथ में थे। बाद में भानावतजी, मेनारियाजी और गुप्तजी कन्याकुमारी की यात्रा पर चल पड़े। मैं धर्मस्थल की मधुर स्मृतियां संजोये हुए वतन की ओर चल पड़ा।

फिर तो इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र दिल्ली में मौल्ली कौशल द्वारा और आर्ट्स कॉलेज ईडर में मृदुला पारीक द्वारा आयोजित लोकसाहित्य के परिसम्वादों में हम और महेन्द्रजी मिलते रहे।

भील आदिवासी गायकों-कथकों को आमंत्रित करके 'राम-सातमा' (भीली रामायण), 'भारथ' (भीली महाभारत), 'राहोरवारता' (पाबूजी जैसा भीलों का महाकाव्य), 'गुजरांनो अरेलो' (बगड़ावत-देवनारायण जैसा भीलों का लोक महाकाव्य) जैसे लोक महाकाव्यों का निर्देशन करते, उनकी व्याख्या करते महेन्द्र राजस्थानी लोकसाहित्य की विविध विधाओं की व्याख्या करके उसके बहुरूपों को विद्वानों के सामने प्रगट करते रहे। परिसम्वादों में हम दोनों की मैत्री गाढ़ से प्रगाढ़ बनती रही।

महेन्द्र भानावत ने लोकसाहित्य के लिए उस समय पदार्पण किया जब ग्राम-जनपदों और आदिवासी पहाड़ी क्षेत्रों पर 'यन्त्रयुग', 'शिक्षण' और 'कृत्रिम सुधार' का प्रभाव पड़ चुका था। परिणामत: उस समय की नयी पीढ़ी अपनी परम्परागत जीवन रीत छोड़ रही थी। अत: वह अपनी मौखिक लोकसम्पदा से दिन-प्रतिदिन विमुख बन रही थी। दूसरी ओर बहुमूल्यवान कंठस्थ लोकसम्पदा के धनी गायक-कथक वृद्धत्व के कारण मृत्यु के कगार पर खड़े थे। ऐसे विषम प्रतिकूल संजोगों में महेन्द्र भानावत को हमारी तरह विविध मोर्चे सम्भालने पड़े।

एक तो काल के सामने जूझकर क्षेत्र कार्य करके ज्यादा-से-ज्यादा कंठस्थ सम्पदा गायकों-कथकों को खुश करके प्राप्त करना था फिर उसे भारतीय लोककला मण्डल जैसी जाहिर संस्था में प्रतिष्ठित करके रक्षित करना था। इसके बाद उस सांस्कृतिक सम्पत्ति को सम्पादित कर, लोक दृष्टिकोण को ध्यान में रखते, उसके प्रकार-स्वरूप तय करते ग्रन्थ रूप में सम्पादित कर राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय विद्वानों तक पहुंचाना था ताकि इस विषय के विद्वान लोकसम्पदा को मूल रूप में समझ सकें। उसकी समीक्षा कर सकें और मूल्यों को परख सकें साथ ही लोककला एवं लोकमनीषा का गौरववर्धन कर सकें।

हम समानधर्मी हैं इसलिए जानते हैं कि महेन्द्र भानावतजी ने ऋतुचक्र और जीवनचक्र के मुताबिक आते पर्व-प्रसंगों पर लोककण्ठों में से बहुत स्वरों को प्राप्त करने के लिए मेघभरी, ठण्डी-गरमाहट भरी और उमस भरी रातों में हजारों किलोमीटर पैदल चल के भगीरथ जैसा क्षेत्र कार्य करने का कठिन तप किया है। महादेव की तरह महेन्द्र ने भी 'लोक गंगा' की बहुधाराओं को अपने घुंघराले बालों में झेलकर मानस में उतारा है और ग्रन्थ रूप में प्रकट करके व्याख्यायित किया है।

राजस्थानी लोकसाहित्य को यदि महेन्द्र न मिले होते तो लोकसम्पदा का एक बड़ा हिस्सा काल की गर्त में गायब हो जाता। उन्होंने राजस्थानी लोकसाहित्य-लोककलाओं को बचाने के लिए पूरा जीवन दिया है।

यदि राजस्थानी लोकसाहित्य के सम्पादन में से डॉ. महेन्द्र भानावत को निकाल लें तो वह निर्धन हो जायेगा और इस अर्थ में भारतीय लोकसाहित्य भी गरीब हो जायेगा।

हमने अभी तक डॉ. महेन्द्र भानावत के अलावा कहीं भी न सुना है और न कहीं भी देखा-पढ़ा है कि राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय फलक पर जीवन की अर्धशताब्दी देकर देश-विदेश की 500 पत्र-पत्रिकाओं में ज्यादा-से-ज्यादा लोकसंस्कृति-लोकसाहित्य-लोककला को विषय बनाकर 10 हजार आलेख लिखे हों और इस विषय को केन्द्र में रखकर शताधिक पुस्तकें प्रगट की हों।

इन अर्थों में महेन्द्र भानावत बीसवीं शताब्दी के अन्तिम चार दशकों के और इक्कीसवीं सदी के आरम्भ के दशक के परम आश्चर्य हैं। **गुजरात के आदिवासी लोकसाहित्य-लोककला के लेखन-सम्पादन के पथ पर चलने वाले हमें, इस बात का गौरव है कि हम महेन्द्र भानावत जैसे लोकविधा-लोकसाहित्यविद् के समकालीन हैं।**

डॉ. पटेल के सम्पर्क नं. - 9428109579

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।